2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्ड्री परीक्षा

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी विशिष्ट

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/03/09

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्र. 621005

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2001	A

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

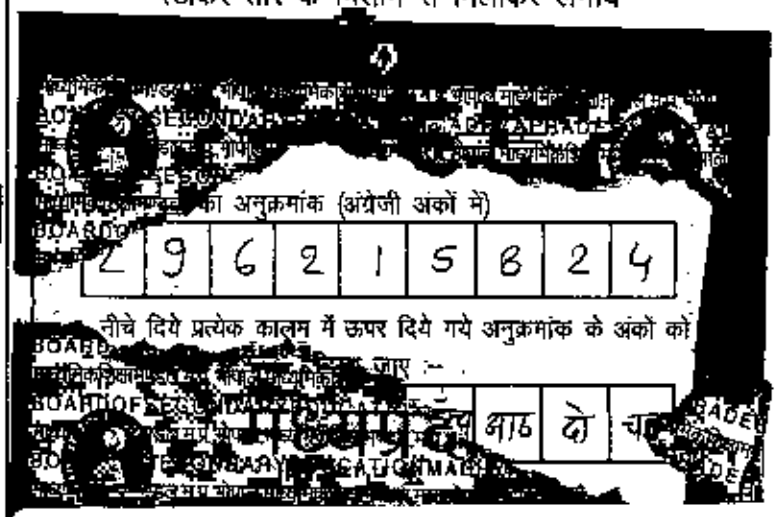

[redacted]

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में तीन अंकों में 3

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक हॉल में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम P. Nd... पद ...

पता/संस्था Exc. Hr. sec. School Vidisha

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी

कि वे

निर्देशों व

करेंगे।

प्रमाणित किया

चस्पा स्थिति

पुस्तिका के अ

हस्ताक्षर (परीक्ष

परीक्षक क्रमांक

ARUN VYAS

9450083

दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

उत्तर क्र॰ - 1

रिक्त स्थान

(i) अक्रूर

(ii) केशवदास

(iii) मीरा की

(iv) सन 1936

(v) दुष्यन्त कुमार

उत्तर क्र॰ - 2

(i) उषा प्रियंवदा

(ii) कायरता

(iii) कबीर

P.T.O.

B S E M I

(iv) छायावाद

(v) प्रगतिवादी

उत्तर क्र०-3

सत्य / असत्य

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

5

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ

उत्तर क्र॰ - 4

सही जोड़ियाँ

(i) काव्य मे सर्वाधिक छन्दो का प्रयोग किया है - (ख) केशवदास ने

(ii) काव्य में भाव-विह्वलता कूट-कूट कर भरी है - (क) मीरा

(iii) राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले कवि हैं - (घ) गोपाल सिंह नेपाल

(iv) रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि हैं - (ग) घनानन्द

~~उद्धव - प्रसंग नामक कविता के रचयिता है~~ ~~(ङ) जगन्नाथदास रत्नाकर~~

B S E M P

P.T.O.

कुल अंक

उत्तर क्र० - 5

एक शब्द में उत्तर

(i) ~~आचार्य विश्वनाथ~~ सूरदास

(ii) सरल वाक्य

(iii) वैद्य

(iv) तात्या टोपे

(v) डाक

5

उत्तर क्र० - 6

अथवा

" शब्द संभारे बोलिए, शब्द के हाथ न पाँव

एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव "

प्रस्तुत दोहे के माध्यम से कबीर जी ने हमे शब्दो की महिमा का ज्ञान कराया है।

कबीरदास जी कहते है कि हमे इस बात का ज्ञान नही रहता कि हमारे द्वारा बोले गए शब्द का कितना महत्व होता है। कबीरदास जी कहते है हमे सदैव मधुर शब्दो का उपयोग करना चाहिए क्योंकि शब्द के हाथ - पैर तो नही होते किन्तु मधुर शब्द सभी को सुनने मे अच्छे लगते है एवं कटु शब्द से लड़ाई झगड़े की स्थिति निर्मित हो जाती है। यदि हम किसी से प्रेमपूर्वक बात करते है तो सामने वाला व्यक्ति प्रसन्न होकर हमारे कार्य करने तैयार हो जाता है।

कबीर के अनुसार,

मधुर शब्द औषधि का काम करते है एवं कटु शब्द घाव की भाँति चुभते है अत: हमे सदैव मीठी वाणी बोलना चाहिए।

P.T.O.

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र० - 7

अथवा

'नीव के पत्थर' से कवि का तात्पर्य उन शहीदो से है जिन्होंने भारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए सहर्ष अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया है।

कवि के अनुसार हमे स्वतंत्रता यूं ही प्राप्त नहीं हुई है बल्कि असंख्य बलिदानियो के लहू के फलस्वरूप हमे यह मिली है। अतः हमारा यह कर्तव्य है कि हम अमर बलिदानियो के उत्सर्ग का महत्व जानते हुए विरासत मे मिली स्वतन्त्रता रूपी धरोधर की रक्षा अपने प्राण त्यागकर भी करें।

स्वतंत्रता रूपी भवन अमर शहीदो के बलिदान रूपी नींव पर खड़ा है।

B
S
E
M

उत्तर क्र. - 8

छायावाद की चार विशेषताएँ :-

(i) क्षणवाद को महत्व :- छायावादी काल में क्षणवाद को विशेष महत्त्व दिया गया है। उनके अनुसार मानव जीवन अनमोल है। इसका प्रत्येक क्षण महत्त्वपूर्ण है।

(ii) व्यक्तिवाद की प्रधानता :- छायावादी युग में व्यक्तिवाद की महिमा का उल्लेख मिलता है।

प्रकृति का मानवीकरण :- छायावाद में प्रकृति को नायिका मानते हुए उसके सौन्दर्य का सजीव वर्णन किया गया है।

प्रेम एवं सौन्दर्य की अनुभूति :- छायावादी युग के कवियों ने प्रेम एवं सौन्दर्य का वर्णन हृदय की गहनानुभूति के साथ किया है। यह वर्णन अत्यन्त रोचक है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

उत्तर क्र. - 9

अथवा

हिन्दी मे नाटक सम्राट " जयशंकर प्रसाद" जी को कहा गया है।

इसका कारण यह है कि उनके नाटको को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो यह नाटक नही बल्कि घटना प्रत्यक्ष रूप से हमारे सम्मुख घटित हो रही है। उनके नाटको मे सजीवता, चित्रोपमता, कथानक की प्रधानता, अभिनेयता, संवाद एवं संकलन - त्रय का कुशल समायोजन, रहता है। वास्तव मे जयशंकर प्रसाद जैसा बहुमुखी साहित्यकार न तो हुआ है, और न ही होगा।

दो नाटको के नाम :-

(i) चन्द्रगुप्त

(ii) ध्रुवस्वामिनी

B S E M

उत्तर क्र०- 10

अथवा

हिमालय की छाँह मे रहकर भी यशोधरा का ताप न पिघलने का कारण यह है कि जब विरह की अग्नि हृदय मे प्रज्ज्वलित होती है तो उसे शीतलता कही भी प्राप्त नही होती, चाहे हिमालय जैसा ठण्डा स्थान ही क्यो न हो।

गौतम अपनी पत्नी एवं पुत्र को छोड़कर सदैव के लिए सन्यासी हो गए व सत्य की खोज मे निर्जन वनो मे भटकते रहे। वे मद्द्यरात्रि मे यशोधरा को बिना बताए चले गए। यशोधरा का हृदय गौतम के चिरवियोग की पीड़ा से भरा हुआ है। वह उनके वियोग मे तड़प रही है। यशोधरा को गौतम के लौटने का इंतजार है। यशोधरा के हृदय मे व्याप्त विरहानुभूति ज्वाला के समान जल रही है एवं यशोदा परेशान है।

P.T.O.

B S E M

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर क्र० - II

उत्तराखण्ड प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सुषमा से परिपूर्ण राज्य है। उत्तराखण्ड में हिन्दुओं के अनेक तीर्थ - धाम स्थित हैं। उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सुन्दरता मनोहारी है। इसकी तुलना कश्मीर एवं स्विट्जरलैण्ड से भी नहीं की जा सकती।

उत्तराखंड के चारों धाम निम्न पवित्र नदियों के किनारे स्थित हैं।

चारों धाम		नदियाँ
i) यमुनोत्री	-	यमुना
ii) गंगोत्री	-	गंगा
iii) बद्रीनाथ	-	अलकनंदा
iv) केदारनाथ	-	मंदाकिनी

जो व्यक्ति एक बार उत्तराखण्ड के प्राकृतिक दृश्यों का हृदय से आनंद प्राप्त कर लेता है वह बार - बार इस नैसर्गिक सौन्दर्य के रसास्वादन हेतु उत्तराखण्ड अवश्य आता है। उत्तराखण्ड धरती के स्वर्ग के समान है।

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र० - 12

अथवा

छप्पय छंद की परिभाषा :-

छप्पय छन्द रोला एवं उल्लाला छन्दों के मिलने से बनता है। इसमें कुल छः चरण होते हैं जिसमें से प्रथम चार चरण रोला के एवं अंतिम दो चरण उल्लाला के होते हैं।

रोला के प्रत्येक चरण में 11 - 13 के क्रम से 24 मात्राएँ एवं उल्लाला के प्रत्येक चरण में 15 - 13 के क्रम से 28 मात्राएँ होती हैं।

छप्पय = रोला + उल्लाला

उदाहरण :-

जहाँ स्वतंत्र विचार न बदलें मन में मुख में।
जहाँ न बाधक बनें सबल निबलों के सुख में।
सबको जहाँ समान निजोन्नति का अवसर हो।
शांतिदायिनी निशा हर्षसूचक वासर हो।

सब भाँति सुशासित हो जहाँ समता के सुखकर नियम
बस उसी स्वशासित देश में जागे हे जगदीश! हम

P.T.O

BSEMP

उत्तर क्र. - 13

मुहावरे :-

(अ) (i) तूती बोलना

वाक्य प्रयोग :- वर्तमान युग में सभी जगह धनवान व्यक्तियों की ही तूती बोलती है।

(ii) गुदड़ी का लाल

वाक्य प्रयोग :- हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी गुदड़ी के लाल थे।

(ब) मध्यप्रदेश में बोली जाने वाली दो बोलियाँ-

(i) बुन्देली :- यह बोली सागर, दमोह, छतरपुर, टीकमगढ़, पन्ना आदि जिलों में बोली जाती है।

(ii) बघेली :- यह बोली रीवा, सतना, सीधी, शहडोल, मैहर, चित्रकूट आदि जिलों में बोली जाती है।

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर क्र॰ - 14

साहित्यिक परिचय - शरद जोशी

(क) दो रचनाएँ :-

शरद जोशी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने अनेक व्यंग्यप्रधान रचनाएँ की। उनमें से दो प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

(i) जीप पर सवार इल्लियाँ

(ii) अन्धों का हाथी

(ख) भाषा - शैली :-

भाषा :- हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक एवं परिमार्जित है। वाक्य-विन्यास सरल किन्तु प्रभावपूर्ण है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा के सौन्दर्य में अपूर्व वृद्धि हुई है। अन्य भाषाओं के शब्दों का समावेश भी जोशी जी ने अपनी रचनाओं में किया है। क्लिष्ट शब्दों के उपयोग के बावजूद भाषा में सर्वत्र प्रवाह एवं रोचकता विद्यमान है।

P.T.O.

BSEMP

शैली :- शरद जी ने अपनी रचनाओं में दो प्रमुख शैलियों का उपयोग किया।

(i) व्यंग्य प्रधान शैली :- शरद जोशी जी ने व्यंग्य-प्रधान रचनाओं के लेखन में इस शैली का उपयोग किया। इस शैली की भाषा चुटीली, मुहावरेदार एवं वाक्य-विन्यास सरल है।

(ii) विवरणात्मक शैली :- शरद जोशी जी ने गंभीर विषयों पर व्यंग्य करते समय व्यंग्यात्मक शैली के साथ-साथ विवरणात्मक शैली का भी उपयोग किया। इस शैली में वाक्य लंबे-लंबे किन्तु रोचक हैं।

(ग) साहित्य में स्थान :- हिन्दी साहित्य के व्यंग्यकारों में शरद जोशी का स्थान सर्वोपरि है। उनकी व्यंग्य प्रधान रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में शरद जोशी जी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। हिन्दी साहित्य में उनका स्थान अमर है।

B S E M P

0
पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर क्र०- 15

साहित्यिक परिचय - जयशंकर प्रसाद

(क) दो रचनाएँ :- जयशंकर प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने कविता, नाटक, कहानी, निबंध, उपन्यास आदि सभी विधाओं मे अपनी रचनाएँ की। उनकी दो प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं :-
(i) लहर
(ii) आँसू

(ख) भावपक्ष - कलापक्ष :-

(1) भावपक्ष :-

(अ) प्रेम एवं सौन्दर्य :- प्रसाद जी छायावाद के आधार - स्तंभ माने जाते हैं। अतः उनकी रचनाओं में प्रेम एवं सौन्दर्य की अनुभूतिपूर्ण विवेचना मिलती है।

(ब) प्रकृति वर्णन :- प्रसाद जी प्रकृतिवर्णन में सिद्धहस्त कवि हैं। उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण करके उसका सजीव एवं मनोहारी अंकन किया है।

P.T.O.

BSEMP

0
पृष्ठ के अंकों का योग

(स) राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम :- प्रसाद जी ने राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम से संबंधित रचनाएँ की। जिनमें वीररस एवं ओज गुण की प्रधानता है।

(2) कलापक्ष :- प्रसाद जी के काव्य का कलापक्ष भी उतना ही उन्नत है जितना कि भावपक्ष।

(अ) अलंकार योजना :- प्रसाद जी के प्रिय अलंकार उपमा, रूपक एवं उत्प्रेक्षा हैं।

(ब) छन्द योजना :- प्रसाद जी की रचनाएँ इस दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण हैं कि उन्होंने मुक्त छन्द में अपनी रचनाएँ लिखी।

साहित्य में स्थान :- प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया। अतः हिन्दी साहित्य सदैव प्रसाद जी का ऋणी रहेगा। प्रसाद जी की रचनाएँ जीवन में प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान करने वाली हैं।

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र० - 16

संकेत - मानव के लिए ------ सकुचा गए।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी गद्य - भारती के गद्यकाव्य "यशोधरा" से उद्धृत किया गया है। इसके लेखक "डॉ० रघुवीर सिंह जी" हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत अवतरण में यशोधरा (गौतम की पत्नी) की विरह - दशा का मार्मिक वर्णन है।

व्याख्या :- लेखक यशोधरा की मनोदशा का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि गौतम संसार के दुःखों को दूर करने एवं सत्य की खोज में मध्यरात्रि में अपने पुत्र राहुल एवं पत्नी यशोधरा को सदा के लिए छोड़कर चले जाते हैं।

जिस गौतम ने संसार के प्राणियों के कष्ट को दूर करने के लिए एक ओर संन्यासी का पद धारण किया।

BSEMP

0

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

वहीं दूसरी ओर वे अपनी पत्नी यशोधरा को चिरवियोग की अग्नि में सदा के लिए जलते हुए छोड़ गए। गौतम ने अपने जीवनरूपी सागर का मंथन किया उससे जो भयंकर विष निकला, उसे यशोधरा ने पिया। किन्तु यशोधरा का कंठ नीला नहीं हुआ। जब सागर मंथन के समय विष निकला था तब परोपकार एवं कल्याण हेतु उसका पान भगवान शंकर ने किया था एवं नीलकंठ कहलाने लगे। किन्तु चिरवियोग के इस भयानक विष को पीकर भी यशोधरा का कंठ नीला नहीं होने के कारण भगवान शंकर भी लज्जित हो गए। यशोधरा का त्याग एवं परोपकार भगवान शिव के परोपकार से भी बड़ा है।

विशेष :- (i) यशोधरा की विरह दशा का मार्मिक चित्रण है।
(ii) यशोधरा की तुलना विष पीने के कारण भगवान शंकर से की गई है।
(iii) भाषा साहित्यिक एवं परिमार्जित है।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

उत्तर क्र० - 17 अथवा

संकेत :- ठान लोगे ------- आने न देना।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी पद्य भारती के "राष्ट्र के श्रृंगार" नामक पाठ से अवतरित है।
इसकी रचना हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले कवि "श्रीकृष्ण सरल" ने की है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि देश के नवयुवकों के हृदय में सोई हुई राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने हेतु उन्हें उनके साहस से परिचित करा रहा है।

व्याख्या :- कवि सरल जी कहते हैं कि यदि तुम दृढ़निश्चय कर लो तो संसार में कोई भी काम कठिन नहीं है। तुम निश्चय करके इस युग की तस्वीर को बदल सकते हो। तुम्हारे अंदर अदम्य साहस विद्यमान है। तुम्हारी भयंकर गर्जना को सुनकर शत्रु पहले

BSEMP

0

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

ही भयभीत हो जाएंगे। तुम रणभूमि में शत्रु के कलेजे को चीर कर रख दोगे। कवि नवयुवकों से कहते हैं कि यदि कभी देश का गौरव - सम्मान दांव पर लगा हो, तो तुम अपने प्राणों की परवाह किए बिना तुरन्त हँसते - हँसते अपना बलिदान कर देना। तुम कभी भी देश की इज्जत पर काली घटाएँ नहीं छाने देना। तुम अपनी जान देकर भी देश के स्वाभिमान की रक्षा करना। हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली स्वतंत्रता की रक्षा करना है कभी भी उस पर किसी भी प्रकार का संकट मंडराने नहीं देना।

काव्य सौन्दर्य :-

(i) वीर रस है।
(ii) ओज गुण है।
(iii) कवि ने देश की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु नवयुवकों का आह्वान किया है।

B
S
E

BSEMP

उत्तर क्र॰ - 18

(क) गद्यांश का उचित शीर्षक :-

" सच्ची कविता की हृदयानुभूति "

(ख) गद्यांश का भावार्थ :-

गद्यांश का भावार्थ यह है कि सच्ची कविता पाठक एवं श्रोता के हृदय पर छाप छोड़ती है। उसका संबंध सीधे श्रोता के हृदय से होता है। सच्चा कवि वही है जिसमें यह सामर्थ्य होती है कि उसकी कविता रसमग्न करने वाला प्रभाव सीधे श्रोता एवं पाठक के हृदय पर पड़े।

(ग) जिन कवियों में अपने हृदय के भाव को यथार्थ रूप में पाठक या श्रोता के हृदय में पहुँचाने की जितनी अधिक प्रतिभा होती है, उन कवियों का सदैव आदर होता है।

P.T.O.

उत्तर क्र० - 19

आवेदन - पत्र

सेवा में,

प्राचार्य महोदय,
सरस्वती विद्या मंदिर,
रायसेन (म० प्र०)

विषय - निर्धन छात्रकोष से छात्रवृत्ति हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

मैं आपके विद्यालय में कक्षा - द्वादश का छात्र हूँ। मेरे पिताजी की वार्षिक आय बहुत कम है तथा परिवार में आठ सदस्य हैं अतः आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण मेरे पिताजी मेरी पढ़ाई का खर्च वहन करने में असमर्थ हैं।

अतएव श्रीमान जी से निवेदन है कि मुझे निर्धन छात्रकोष से छात्रवृत्ति प्रदान करें ताकि मेरा भविष्य अन्धकारमय होने से बच जाए।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

दिनांक
6 - 3 - 09

अ, ब, स
कक्षा - 12

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

2009

(1)

(25)

ा उ.पु. 4 पृष्ठ

ोपाल

परीक्षक के लिये

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

[redacted]

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 14/3/05
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक केन्द्र क्र. 621005
6. परीक्षा का नाम
7. विषय हिन्दी विशिष्ट 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक

पृष्ठ

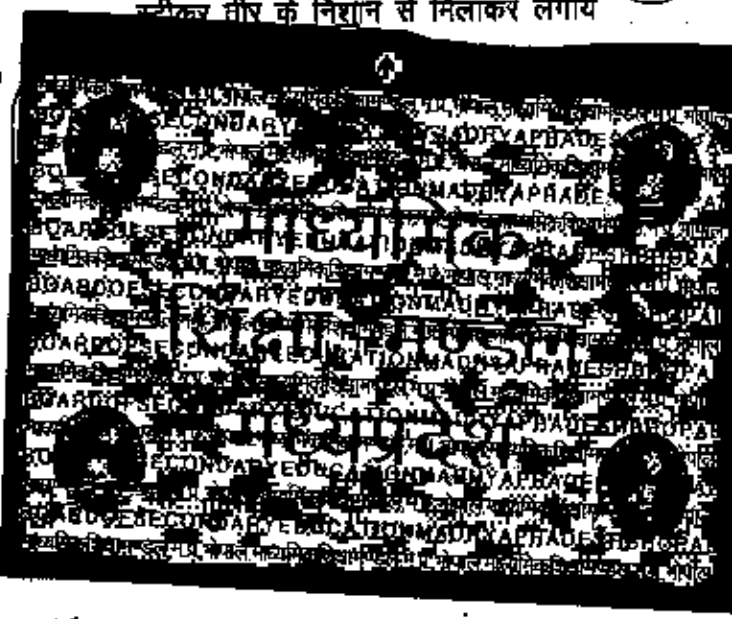

B S E M P

उत्तर क्र० - 20

निबंध - आतंकवाद और राष्ट्रीय अखण्डता

रूपरेखा :-

(1) प्रस्तावना
(2) ~~आतंकवाद का कारण~~
(3) ~~आतंकवाद का जाल - विश्व स्तर पर~~
(4) भारत मे आतंकवाद
(5) राष्ट्रीय अखण्डता पर प्रभाव
(6) आतंकवाद का समाधान
(7) उपसंहार

0

पृष्ठ के अंकों का योग

" कराह उठी है मानवता,
आतंकवाद हटाओ।
मानवता के इस शत्रु को,
जल्दी दूर भगाओ ॥"

B(1) SEMP

प्रस्तावना :-

आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद जैसी गंभीर समस्या से ग्रसित है। सम्पूर्ण विश्व मे आतंकवाद ने अपने पैर - पसार लिए है। दुनिया का कोई भी देश इस समस्या से बच नही पाया। इस समस्या ने सभी देशो के निवासियो का सुख - चैन छीन लिया है एवं उनकी रातो की नीदें उड़ा दी है। आतंकवाद का आशय है "अपनी कुत्सित इच्छाओं की पूर्ति हेतु हिंसक गतिविधियों का सहारा लेकर समाज के उच्च वर्गो के लोगो को डराकर अपनी स्वार्थपूर्ति करना।"

2. आतंकवाद का कारण :-

" दुश्मनों को गले से लगाया हमने,
दोस्ती का रिश्ता भी खूब निभाया हमने।
उसी ने हमारी पीठ में खंजर घोंपा,
जिसे गले से लगाया हमने ॥"

आज सम्पूर्ण विश्व जानता है कि आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला देश पाकिस्तान है। पाकिस्तान की धरती पर ही आतंकवादियों को संरक्षण दिया जा रहा है। पाकिस्तान दुनिया भर मे आतंकवादी भेजता है। पाकिस्तान मे आतंकियो को कैम्प लगाकर ट्रेनिंग दी जाती है उन्हें इन गतिविधियों को अंजाम देने के लिए धन एवं औजार - हथियार उपलब्ध करवाए गए है।
पाकिस्तान ही आतंकवाद की जड़ है।

BSEMP

0

पृष्ठ के अंकों का योग

(28)

(4)

योग

"नफरत के बीज बोने की आदत कहाँ से आ
हमसे नजर मिलाने की ताकत कहाँ से आई
टकराने तू चला है हिमालय से अपना सर
नापाक पाक तुझमे यह ताकत कहाँ से आई"।

BSEMP

(3) आतंकवाद का जाल विश्व स्तर पर :-

आज सम्पूर्ण विश्व की शांति को भंग करने के लिए आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा है। दुनिया मे जगह-जगह बम विस्फोट विमान अपहरण आदि की घटनाएँ बढ़ती ही जा रही हैं।

11 सितंबर 2001 को अमेरिका मे ओसामा बिन लादेन नामक आतंकवादी ने विमान घुसाकर पूरी इमारत को तबाह कर डाला।

8

पृष्ठ के अंको का योग

Examination\Ans081.pm5

2009 माध्य

1. केन्द्र की सील

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक केन्द्र क्र. 621005

6. परीक्षा का नाम

7. विषय हिन्दीवि. 8. माध्यम हिन्दी

8. दिनांक 6/3/09

पृष्ठ

चेलाकर लगायें

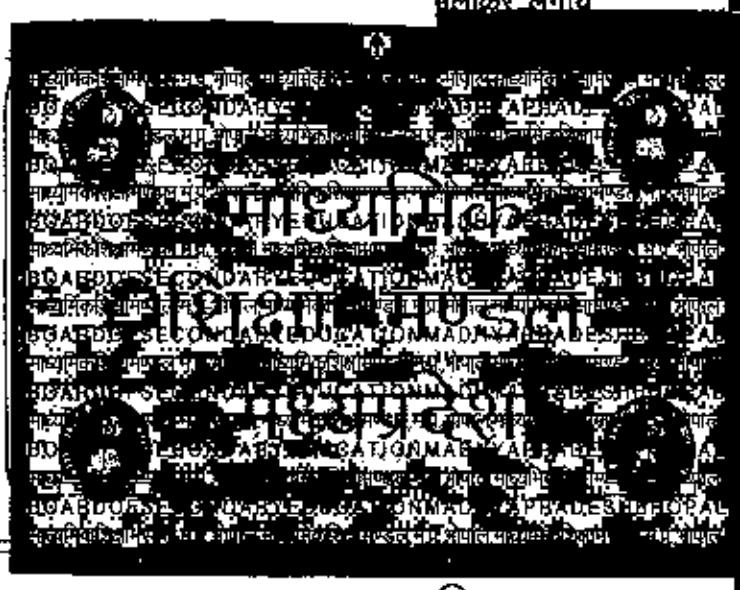

आतंकवादी संगठनों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संचालन किया जा रहा है। अलकायदा, जैश ए - मोहम्मद लश्कर आदि ऐसे ही आतंकवादी संगठन हैं।

"आतंकवाद को जड़ से मिटाना है दोस्तों।
ये काम हमको करके दिखाना है दोस्तों।
गद्दारों को दुनिया से मिटाना है दोस्तों।
इस श्राप से मुक्ति दिलाना है दोस्तों।।"

BSEMP

0

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

(4) भारत मे आतंकवाद :-

देश की स्वतंत्रता के बाद से ही भारत मे आतंकवादी गतिविधियो को अंजाम दिया जाने लगा। आतंकी घटनाओ का प्रमुख उद्देश्य देश की शान्ति को भंग करना है एवं अमनप्रिय लोगो को भयभीत कर देश की अखण्डता को खण्डित करना है।

भारत मे विविध धर्मों संस्कृतियो के लोग रहते हैं अतः आतंकवादी धर्म के नाम पर लोगो के मन मे भेदभाव पैदा करना चाहते हैं।

भारत मे आतंकवादी घटनाओ के कारण 31 अक्टूबर 1984 को भारत की महिला प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गाँधी की हत्या कर दी गई। 21 मई 1991 को प्रधानमंत्री राजीव गाँधी जी का निधन बम विस्फोट मे हो गया।

B S E M P

0

पृष्ठ के अंकों का योग

26 नवंबर 2008 को मुंबई पर आतंकवादियों ने हमला कर दिया। जिसमें 167 लोगों की मौत हुई।

इस प्रकार भारत में निरंतर आतंकवादी घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। आतंकवादी संकटमोचन मंदिर तक पहुंच गए। सन् 2001 में उन्होंने संसद पर हमला किया।

B S E M P (5)

राष्ट्रीय अखंडता पर प्रभाव :-

भारत की आजादी शुरू से आतंकवादियों को पसंद नहीं है। आतंकवादी अपने कृत्य द्वारा भारत की एकता एवं अखण्डता को खण्डित कर देश की स्वतंत्रता को भंग करना चाहते हैं।

हमारे ही देश के कुछ गद्दार लोग इस कार्य में आतंकवादियों की मदद करते हैं।

0

पृष्ठ के अंकों का योग

कुछ रुपयों के लालच में वे अपने ईमान का सौदा करने तैयार हो जाते हैं।

(6) आतंकवाद का समाधान :-

"मुल्क के हालात कुछ ऐसे बदलना चाहिए।
नफरतों को प्यार के साँचे में ढलना चाहिए।
बोटी-2 नोच के खा ना जाएँ कौएँ सभी
कातिलों को फंदे पर तब तक लटकना चाहिए।।"

आतंकवाद जैसी गंभीर समस्या के निवारण हेतु हमें विश्व स्तर पर संगठित होना चाहिए।

हमारे देश का कानून बहुत कमजोर है। कानून को कठोर करते हुए हमें आतंकवादियों को तत्काल फांसी पर लटका देना चाहिए।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

2009

..., भोपाल

परीक्षक के लिये

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

1. केन्द्र की सील

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक केन्द्र क्र. 621005

6. परीक्षा का नाम

7. विषय हिन्दी वि० 8. माध्यम हिन्दी

8. दिनांक 6/3/09

पृष्ठ

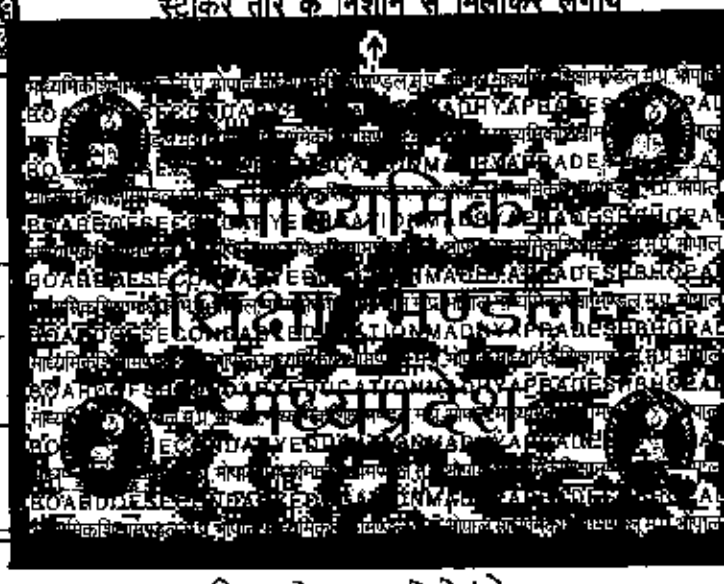

BSEMP

0

पृष्ठ के अंकों का योग

" आतंकवाद को न धर्म से जोड़ेंगे याद रख

अब जंग से मुँह न मोड़ेंगे याद रख।

ये बार-बार रोज का झगड़ा न रहेगा।

अब की तुझे मिटाके ही छोड़ेंगे याद रख।।

हमें इस समस्या के समाधान हेतु प्रयासरत रहना चाहिए। आतंकवादियों के लिए कड़े से कड़े कानून बनाए जाने चाहिए।

(7) उपसंहार :-

"एक देश संदेश एक है,
एक हमारा नारा है।
आतंकवाद को जड़ से मिटाना,
मूल उद्देश्य हमारा है॥"

आतंकवाद जैसी गंभीर समस्या के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को संकल्पित होना चाहिए।

हमें एकजुट होकर इस समस्या के प्रति आवाज बुलन्द करनी चाहिए।

"हम भोर का सूरज हैं कोई शाम नहीं है,
जो चढ़कर उतर जाए वो जाम नहीं है।
हम मिट नहीं सकते दुनिया को बता दो,
हम राम हैं, घनश्याम हैं, सद्दाम नहीं है।

3

आतंकी घटनाओं के कारण जन - धन की बहुत ज्यादा क्षति होती है। इन घटनाओं में प्रतिवर्ष हजारों लोग मारे जाते हैं। हमे यह प्रयास करना चाहिए कि हम सरकार का आतंकवाद जैसी गंभीर समस्या से निपटने में सहयोग करें। हमें अपने देश की आजादी पर मंडरा रहे खतरे को समाप्त कर देना होगा। यह हमारा परम कर्त्तव्य है। प्रत्येक भारतवासी को प्रण लेना चाहिए कि

"अमर शहीदो के तप को बदनाम नहीं होने देगें।
देश की आजादी की कभी शाम नहीं होने देगें।
जब तक शरीर में रक्त की एक बूंद भी बाकी
भारतमाता की इज्जत को नीलाम नहीं होने देगें।।

10

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग